THE RESEARCH JOURNAL OF ENVIRONMENT, CULTURE AND DEVELOPMENT (T.R.J.E.C.D.)
A Monthly International Journal of Multidisciplinary Research, Peer Reviewed-Refereed & Impact Factor - 4.8
ISSN : 2349-3313, Vol. : 10, No. : 8, January - 2025, Conference Special Issue Hindi

पर्यटन का प्रभाव : एक अध्ययन

Bibha Rani
Assistant Professor, Department of Sociology, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa

पर्यटन विश्व के सबसे बड़े और तेजी से बढ़ते व्यापार और वैश्विक उद्योगों में से एक है, जो सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से दुनिया पर अपना प्रभाव डालता है। यह न केवल देश की अर्थव्यवस्था को अति व्यवस्थित, सुरक्षित और मजबूत करता है, बल्कि संस्कृति के विकास और पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव डालता है। यह न केवल आर्थिक विकास का माध्यम है बल्कि सांस्कृतिक व सामाजिक बदलाव का भी प्रमुख कारण बनता है। लोग पर्यटन के माध्यम से न केवल नई जगह की खोज करते हैं बल्कि नई संस्कृतियों परंपराओं और जीवन शैली के बारे में भी सीखते हैं, हालांकि यह बात तो स्पष्ट है कि कोई भी विषय या वस्तु अपनी सकारात्मक के साथ कुछ नकारात्मकता से भी व्याप्त होती है। वैसे ही पर्यटन में भी सकारात्मक और नकारात्मकता प्रभाव दोनों ही व्याप्त है।

आज वैश्वीकरण के युग में पर्यटन का क्षेत्र न केवल आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम है बल्कि प्रमुख स्तंभ भी बन चुका है। यह रोजगार सृजन, व्यापार संतुलन और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी सहायक है। जब विदेशी पर्यटक किसी देश का भ्रमण करते हैं तो वह अपनी सांस्कृतिक धरोहर और अनुभव साझा कर करने के साथ–साथ विदेशी मुद्रा का योगदान देते हैं। यह विदेशी मुद्रा, किसी विदेशी की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने, व्यापार संतुलन में सुधार लाने और रोजगार के अवसर प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विदेशी मुद्रा का संग्रह मे न केवल देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाता है बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को भी प्रोत्साहन देता है। भारत जैसे विकासशील देश जो अपनी सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक धरोहर और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध पर्यटन उद्योग को विदेशी मुद्रा अर्जन करने का महत्वपूर्ण साधन मानते हैं, जहां पर्यटक का एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक आधार समृद्ध है। विदेशी मुद्रा संग्रह अर्थव्यवस्था के विकास में विशेष भूमिका निभाता है। यह न केवल आर्थिक समृद्धि लाता है। बल्कि वैश्विक स्तर पर देश की पहचान को भी मजबूती प्रदान करता है। ताजमहल, कश्मीर की वादियां, राजस्थान के किले, अनेकों मंदिर और केरल के बैंक वाटर पार्क जैसे आकर्षण स्थलों ने भारत को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया है।

इस लेख में हम पर्यटन और विदेशी मुद्रा के आपसी संबंधों, देश की अर्थव्यवस्था पर लाभ, प्रभाव और चुनौतियों कर विस्तृत रूप से अध्ययन करेंगे साथ ही भारतीय परिपेक्ष में पर्यटन के महत्व और सुधार के उपाय पर भी चर्चा करेंगे।

पर्यटन का आर्थिक प्रभाव :– पर्यटन का आर्थिक प्रभाव विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है। यह स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। पर्यटन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सकारात्मक रूप से फलित करता है जो रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करता है और स्थानीय व्यवसाय को बढ़ावा देता है और विदेशी मुद्राओं को भी बढ़ावा देता है।

रोजगार के अवसर में पर्यटन से होटल, परिवहन, गाइड सेवाएं, स्थानीय उत्पाद और हस्तशील उद्योगों में रोजगार के बड़े अवसर उत्पन्न होते हैं। जिससे स्थानीय लोगों के साथ लाखों लोगों को रोजगार के अवसार मिलता है। जैसे कि राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन ने हस्तशिल्प और ऊंट की सवारी जैसे सेवाओं से रोजगार को बढ़ावा दिया है।

मौसमी रोजगार में पर्यटन के चरम समय में अस्थाई रोजगार भी उत्पन्न होते हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। विदेशी मुद्रा के स्रोत में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक जब किसी देश का दौरा करते हैं तो वहां के उत्पादन और सीमाओं पर अपना धन खर्च करते हैं जिससे देश की मुद्रा भंडार में वृद्धि होती है और विदेशी मुद्रा का संग्रह होता है। यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यधिक लाभदायक है। यह धनराशि देश के विकास के कार्यों में उपयोग की जाती है।

बुनियादी ढांचे का विकास :– पर्यटन उद्योग किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का एक प्रमुख साधन है। जैसे पर्यटन स्थलों के विकास के लिए सड़के, हवाई अड्डे, होटल, सार्वजनिक परिवहन और अन्य बुनियादी ढांचागत परियोजना का निर्माण होता है, जो स्थानीय निवासी के लिए भी लाभकारी होता है। मगर इसका नकारात्मक पहलू यह है कि कभी–कभी स्थानीय लोग और समुदायों को इन परियोजनाओं के लिए विस्थापित किया जाता है। जिससे स्थानीय व्यापार पर प्रभाव पड़ता है। पर्यटन से स्थानीय व्यापार को भी बढ़ावा मिलता है।

पर्यटक स्थानीय बाजारों से वस्त्र हस्तशिल्प सामग्री और अन्य वस्तुएं खरीदते हैं। इससे न केवल स्थानीय व्यापारियों की आय बढ़ती है बल्कि छोटे–छोटे उद्योगों का विकास भी होता है। हस्तशिल्प और स्मृति चिन्ह से पर्यटन स्थलों पर बिकने वाली स्थानीय उत्पादन उदाहरण के लिए राजस्थान की पेंटिंग, कश्मीर की साल, बिहार की मधुबनी पेंटिंग और उत्तर पूर्व में बांस उत्पादन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रचलित और प्रसिद्ध हैं। हालांकि कभी–कभी पर्यटन से आर्थिक असमानता भी होता है पर्यटन स्थलों पर बड़े कॉर्पोरेट व्यवसाय होटल और रिसॉर्ट जिससे बाहरी निवेशकों को लाभ होता है जो स्थानीय व्यवस्थाओं को पीछे छोड़ सकते हैं। जिससे स्थानीय समुदायों को संघर्ष करना पड़ता है। देश के सांस्कृतिक ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहर के बारे में जागरूकता बढ़ता है। विचारों का आदान–प्रदान होता है और वैश्विक स्तर पर पहचान बढ़ती है।

पर्यटन का सामाजिक प्रभाव :– सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं को एक दूसरे के करीब आते हैं, उन्हें जोड़ने हैं। संस्कृति के आदान–प्रदान को बढ़ावा देते हैं। यह स्थानीय समुदायों को अन्य संस्कृतियों के साथ संपर्क में लाता है। पर्यटक स्थानीय रीति रिवाज, भाषाओं, पोशाक, रहन–सहन और खान–पान से परिचित होते हैं, जिससे वैश्विक भाईचारा बढ़ता है। और इसका प्रभाव देश के समाजिक संस्कृतियों और परंपराओं को प्रभावित करता है। विदेशी प्रभाव स्थानीय संस्कृतियों और परंपराओं को दबा सकते हैं।

संस्कृतिक क्षरण में बढ़ते पर्यटन के कारण के कई बार स्थानीय परंपरा और रीति रिवाज कमजोर हो जाते हैं। उदाहरण के लिए हिमालय के क्षेत्र में आधुनिक पर्यटक ने स्थानीय रीति रिवाज पारंपरिक जीवन शैली को प्रभावित किया है।

सांस्कृतिक संरक्षण :– सांस्कृतिक संरक्षण से पर्यटन ने कई ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने में मदद की है। उदाहरण के लिए आगरा का ताजमहल, जयपुर के किले, उड़ीसा के सूर्य मंदिर, कोणार्क और कई मंदिरों को संरक्षित करने के लिए प्रयास किए गए हैं। कभी–कभी पर्यटन सामाजिक समस्याओं को भी जन्म देता है स्थानीय संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। जैसे परंपराओं का व्यवसायीकरण, अधिक पर्यटक आने पर स्थानीय संस्कृ ति व मूल्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। पर्यटन स्थलों पर अत्यधिक भीड़ होने से जनसंख्या पर दबाव पड़ता है जिससे स्थानीय संसाधन जैसे बिजली, पानी और यातायात आदि पर भार बढ़ता है। सामाजिक ढांचे में परिवर्तन होती है। पर्यटन के कारण स्थानीय समुदायों की जीवन शैली में बदलाव आता है। जहां सकारात्मक पक्ष में जीवन स्तर में सुधार होता है किंतु नकारात्मक पक्ष में कभी–कभी संस्कृति को नैतिक मूल्यों का ह्रास भी होता है।

महिला सशक्तिकरण में पर्यटन, महिलाओं के लिए नए रोजगार के अवसर प्रदान किया है। जैसे महिला गाइड, हस्त शिल्प कारीगरी, पारंपरिक व्यंजन बनाना, पारंपरिक स्थानीय नृत्य गायन आदि। अनैतिक गतिविधियां जैसे कुछ पर्यटन स्थलों पर नशाखोरी और अवैध गतिविधियां बढ़ती हैं।

पर्यटक को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक :–

धार्मिक आस्था :– धार्मिक आस्था आरंभ से ही पर्यटन का कारण रही है। "चारैवति" चलते रहो मनुष्य जाति के लिए देशाटन का मूल मंत्र ही रहा है बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा था कि निर्भय होकर विचरण करो और अपनी राह खुद बनाओ। इस्लाम धर्म में भी हज की धार्मिक यात्रा को पांच कर्तव्यों में से एक माना गया है। बाइबल के अनुसार देशाटन से हिंसक व्यवहार के द्वारा किए गए पाप कर्मों के कलंक धुल जाते हैं यह विश्वास ईसाइयों में तब से हो रहा है जब अपने भाई रूबल की हत्या का कलंक मिटाने के लिए केन प्रभु यहोवा ने ईश्वरीय आदेश से देशाटन पर निकला था। हिंदू धर्म शास्त्रों में तीर्थों की कष्टकर यात्रा करके तीर्थ स्थल में डुबकी लगाकर सारे पाप दोनों धोने की बातों के प्रति प्रबल विश्वास है।

आस्था के इतिहास में इन सभी कारणों से ही मनुष्य में तीर्थ स्थलों के प्रति प्रारंभ से ही आकर्षण रहा है। देशाटन की परंपरा ही बाद में पर्यटन में परिवर्तित होती चली गई। किसी स्थान पर धार्मिक इतिहास ही वहां जाने के लिए प्रेरणा का कारण बनता है। जैसे भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या पावन तीर्थ के रूप में धार्मिक आस्था का केंद्र बन गया है। मथुरा वृंदावन भगवान श्री कृष्ण के कारण, अजमेर स्थित ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, बोधगया का महाबोधि मंदिर, इलाहाबाद का संगम कुंभ मेला, सोमनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, आदि के साथ ही तमिलनाडु का मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, आदि। अनेक ऐसे आध्यात्मिक स्थल हैं जिनसे देश के करोड़ों लोगों की भावनाएं जुड़ी हुई है।

प्राकृतिक दृश्य :– आरंभ से ही प्राकृतिक से मनुष्य का लगाव रहा है। नयनाभिराम प्राकृतिक दृश्यावली इस रूप में मनुष्य को लुभाती है कि इससे वह अपने अंदर नई ऊर्जा और नई शक्ति का संचार शुरू कर पता है।

कल–कल बहती नदियां और झरनों की शान, दूर तक फैली हरियाली, मनोरम समुद्र तट आदि प्रकृति के ऐसे तत्व हैं जो पर्यटन को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कोई स्थान किन्हीं विशेष रुचि के पर्यटकों को इसलिए आकर्षित करता है कि वहां पर दूर तक हरीतिमा से आच्छादित वातावरण होते है, तो कोई केवल इसलिए आकर्षित करता है कि वहां बियाबान जंगल और वन्य जीव है। किसी के लिए कल–कल बहती नदी आकर्षण का केंद्र होती है। तो कोई पर्वतों के बीच आनंद की अनुभूति करता है। प्राकृतिक दृश्यावलियाँ पर्यटकों के लिए आकर्षक तत्वों का कार्य करती हैं। यह आकर्षण तत्व ही उस स्थान को धीरे–धीरे पर्यटन केंद्र बना देता है।

शिमला को उसकी प्राकृतिक खूबसूरती के कारण ही अंग्रेजों ने ब्रिटिश राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया। धरती के स्वर्ग के रूप में कश्मीर, देवताओं की भूमि के रूप में केर, प्रकृति के अद्भुत नजारों की भूमि के रूप में सिक्किम, पहाड़ों की रानी के रूप में मंसूरी आदि स्थल पर्यटकों को विशेष रूप से लुभाते हैं। इन स्थानों की प्राकृतिक दृश्यावलियाँ ही वह कारण रही है, जिससे यह पर्यटन स्थल के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना सकें हैं।

आधुनिक भागम–भाग के कुछ पल प्राकृति के बीच गुजरने की चाह ने प्राकृतिक रूप से समृद्ध स्थान की सैर के लिए मनुष्य को प्रेरित किया है। प्रातः काल जगकर टाइगर हील तक पहुंचाने के लिए पर्यटकों में होड़ लग जाती है कि वह प्रातः काल के सूर्योदय के नजारे को देखना चाहते हैं। माउंट आबू में शाम होते ही सनसेट पॉइंट पर सूर्यास्त के दृश्य को निहारने के लिए भीड़ होने लगती है। कश्मीर, शिमला, ऊटी आदि ठंडे प्रदेशों में बर्फ को गिरते हुए देखने की चाह पर्यटकों को वहां ले जाती है। मिलो में फैले हुए रेगिस्तान को पास से देखने की इच्छा सुदूर स्थानों से पर्यटकों को राजस्थान खींच लाती है।

झारखंड के गढ़वा जिले में सरूअत गांव जो पहाड़ पर बसा है जिसे झारखंड का कश्मीर कहते हैं यहां की खूबसूरत वादियां पर्यटकों का मन मोह लेती है। यहां बादलों कों करीब से देखा जा सकता है।

झारखंड के लातेहार जिले में स्थित नेतरहाट को छोटा नागपुर की रानी कहा जाता है। झारखंड का हिल स्टेशन नेतरहाट जहां मई और जून के गर्मियों में बसंत का एहसास होता है। नेतरहाट में सुहाने मौसम के साथ–साथ घूमने की कई स्थान है। जो पूरी तरह से प्राकृतिक हैं नेतरहाट का सनराइज प्वाइंट, (कोयल व्यू) सनसेट पॉइंट, (मंगोलिया पॉइंट) अपर घाघरी, लोअर घाघरी, नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नाशपाती बागान, नेतरहाट डैम समेत कई अन्य स्थान है जहां पर्यटकों की भीड़ लगती है।

सांस्कृतिक धरोहर :– सभ्यता और संस्कृति किसी स्थान विशेष को लोकप्रिय बनाने वहां के प्रति आकर्षण पैदा करने, वहां की सांस्कृतिक धरोहर संबंधी तत्वों का सभी स्तरों पर योगदान होता है। पर्यटन स्थल का आकर्षण वहां के प्राकृतिक वैभव आदि से तो होता ही है साथ ही उस स्थान की सांस्कृतिक परंपराओं से भी होता है। जो राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा आदि विभिन्न राज्यों की संस्कृति परंपराएं मन को आह्लादित ही नहीं करती बल्कि लुभाती भी हैं।

हमारी संस्कृति यहां की विभिन्न कलाओं में अब भी जीवंतता के साथ धड़कती है। उत्तरी भारत के कश्मीर, पंजाब, हिमालय, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में हस्तशिल्प में काष्ट शिल्प, धातु के बरतन, जरी का काम, चांदी के बर्तन, हाथी दांत से बनी वस्तुएं आदि पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। वहीं पूर्वी भारत के उड़ीसा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की मिट्टी की मूर्तियां, कागज चित्रावली और काष्टशिल्प आदि काफी प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश का पत्थर शिल्प, कसीदाकारी, राजस्थान का टेराकोटा, चंदन शिल्प, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और गुजरात कई राज्यों की हस्तकालओं में टोकरी निर्माण कार्य, चटाई निर्माण कार्य, कठपुतली आदि का कार्य पर्यटन उत्पादन के रूप में पर्यटकों को आकर्षित करता है। सांस्कृतिक धरोहर के अंतर्गत विभिन्न रंगों से रंगी भारत की भूमि पर्यटकों के लिए असीम आकर्षण का केंद्र है। जीवित और प्रदर्शनात्मक कलाओं के विविध रूपों में संस्कृति परंपराएं निरंतर भ्रमण की गतिविधियों को प्रोत्साहित करती हैं। ऐसा कहा जा सकता है की सांस्कृतिक धरोहर पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख कारण है। जितनी समृद्धि किसी स्थान की सांस्कृतिक धरोहर होगी उतना ही अधिक विकसित वहां का पर्यटन उद्योग होगा क्योंकि इसी से अधिकांश पर्यटन गतिविधियां प्रभावित होती हैं।

शैक्षिक तत्व :– किसी स्थान को पर्यटन बनाने में शिक्षा का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है। प्राचीन काल में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय में विद्या अर्जन का इतना आकर्षण था कि दूर–दूर से विद्यार्थी इन केन्द्रों पर पढ़ने आया करते थे। मजहब के आधार पर धार्मिक शिक्षा के केंद्र भी कालांतर में पर्यटन के आकर्षण का केंद्र बनते चले गए। जैसे हिमालय प्रदेश में धर्मशाला पर्यटन के रूप में काफी विख्यात है। इस पहाड़ी पर्यटन केंद्र का आकर्षण धर्मशाला से कुछ ऊंचाई पर मैकलोड़ गंज स्थित बौद्ध विश्वविद्यालय भी

है। इसी प्रकार सिक्किम में रूमटेक बौद्ध शिक्षा का देश का एक प्रमुख केंद्र होने के कारण आकर्षण का केंद्र है। विभिन्न स्थानों पर वहां के शिक्षा केंद्र और प्राचीन शिक्षा पद्धत्तियों के बारे में जानने की जिज्ञासा पर्यटकों को अपनी ओर लुभाती है। बनारस का हिंदू विश्वविद्यालय हो या फिर आधुनिक शिक्षा केंद्र के रूप में सिलिकॉन सिटी के नाम से मशहूर बेंगलुरु शहर इन सभी का आकर्षण का केंद्र वहां का नैसर्गिक सौंदर्य तो है ही साथ ही वहां का शिक्षा तत्व भी है। इसी प्रकार राजस्थान के कोटा ने तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में देश में प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी पहचान बना ली है।

चिकित्सा पर्यटन :– यह भारत के प्रमुख उद्योग और अर्थव्यवस्था का तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है। विदेशी नागरिकों के लिए चिकित्सा सेवाओं, उपचार और स्वास्थ्य लाभ की खोज में भारत आने की प्रक्रिया है। चिकित्सा पर्यटन ने न केवल भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को एक नया आयाम दिया है बल्कि यह विदेशी मुद्रा अर्जन और देश की साख बढ़ाने में भी सहायक साबित हुआ है।

कर्नाटक आज चिकित्सा पर्यटन का सबसे बड़ा केंद्र बनकर उभरा है। बेंगलुरु में हृदय की सर्जरी में सफलता की 99.3 प्रतिशत की दर दुनिया भर में एक मिसाल बनकर सामने आई है। कर्नाटक के बाद राजस्थान में भी टेली मेडिसिन की शुरुआत हो चुकी है। एलोपैथी चिकित्सा के लिए कर्नाटक राज्य अग्रणी है। वही आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के मामले में केरल ने अपनी विशेष स्थान बना ली है। केरल के पंचकर्म उपचार नें तो विश्व भर में अपनी पहचान बनाई है। पंचकर्म के तहत पांच तरह के उपचारों से निर्मित पद्धति से शरीर के अंगों, मस्तिष्क, श्वसन क्रिया और स्नायुओं को चुस्त किया जाता है तथा रक्त शुद्धि की जाती है। केरल पर्यटन अनुपम स्वस्थ अवकाश कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। प्राचीन भारत की चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद पर आधारित है।

वैसे भी भारत अपनी परंपरागत चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध है। अब तो भारतीय चिकित्सा पद्धती और प्राकृतिक चिकित्सा को पूरे विश्व में अपनाया जाने लगा है परंपरागत भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के अंतर्गत आयुर्वेद, पंचकर्म, योग, पुनः यौवन ने स्वास्थ्य पर्यटन को नई उपलब्धियां दी है। स्वस्थ और परिवार कल्याण मंत्रालय ने विश्व के लोगों के लिए भारत को एक स्वस्थ गंतव्य के रूप में संवर्धित करने की दृष्टि से टास्क फोर्स का गठन भी किया है।

सुझाव :– पर्यावरण अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्थानीय समुदायों को पर्यटन के लाभ में शामिल करें। सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं को अपनाना चाहिए। पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है जैसे प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पुलिस और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती हो। विदेशी पर्यटकों के लिए हेल्पलाइन सेवाओं का संचालन, महिला पर्यटकों के लिए विशेष सुरक्षा का ध्यान रखते हुए सुरक्षित यात्रा अनुभव सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इ–वीजा और डिजिटल सेवाएं, ऑनलाइन गाइड, मोबाइल एप और वर्चुअल टूर की सुविधा भी प्रदान की जानी चाहिए। बहुभाषी पोर्टल का निर्माण हो जिससे विदेशी पर्यटक आसानी से जानकारी प्राप्त कर सके। नए पर्यटन क्षेत्र का विकास करना चाहिए। ग्रामीण और इको टूरिज्म पर ध्यान दिया जाना चाहिए। गांव की संस्कृति व पारंपरिक जीवन शैली को पर्यटन के केंद्र में लाना। जैव विविधता वाले क्षेत्रों में पर्यावरण अनुकूल पर्यटन का विकास। एडवेंचर टूरिज्म जैसे ट्रैकिंग, राफ्टिंग, पर्वतारोहण और अन्य साहसिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देना चाहिए। स्वास्थ्य और वैलनेस टूरिज्म में जैसे योग, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों को बढ़ावा देना चाहिए। सांस्कृतिक व धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन और धार्मिक स्थल का विकास जैसे काशी, तिरुपति, अमृतसर, अमरनाथ जैसे धार्मिक स्थलों पर बेहतर सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।

पर्यटन स्थलों के प्रबंधन में सुधार पर ध्यान दिया जाना चाहिए जैसे पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संरक्षण में ऐतिहासिक स्थलों और धरोहरों का संरक्षण। इन स्थलों पर भीड़ प्रबंधन और टिकटिग सिस्टम में सुधार। साफ सफाई और स्वच्छता में "स्वच्छ भारत अभियान" को पर्यटन स्थलों पर प्राथमिकता देना चाहिए। विदेशी पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाना भी अनिवार्य होगा। स्थानीय भाषा सेवाएं उपलब्ध कराना चाहिए। विदेशी भाषाओं में प्रशिक्षित गाइड और जानकारी उपलब्ध कराना चाहिए। बेहतर बुनियादी ढांचे का निर्माण में परिवहन सुधार जैसे पर्यटन स्थलों पर पहुंचने के लिए सड़क रेलवे और हाईवे यातायात में सुधार।

प्रमुख स्थलों पर सार्वजनिक परिवहन की सुविधा बढ़ाना। आधुनिक सुविधाएं बढ़ाना जैसे उच्च गुणवत्ता वाले होटल, रेस्टोरेंट और पर्यटक सूचना केन्द्रों का निर्माण। डिजिटल सुविधा जैसे वाईफाई, हॉटस्पॉट और ऑनलाइन टिकटिंग सेवाओं को उपलब्ध कराना।

निष्कर्ष :– पर्यटन एक महत्वपूर्ण उद्योग है लेकिन इसके प्रभाव को संतुलित करना आवश्यक है पर्यटन का प्रभाव व्यापक और बहु आयामी है यह आर्थिक विकास का एक प्रमुख साधन है लेकिन इसके साथ–साथ इसके नकारात्मक प्रभाव को भी नजर अंदाज नहीं

किया जा सकता है, जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देकर हम इसके नकारात्मक प्रभाव को खत्म तो नहीं कर सकते हैं परंतु कम जरुर कर सकते हैं और इसे सामाजिक आर्थिक व पर्यावरणिक रूप से लाभकारी बना सकते हैं। पर्यटन एक दोधारी तलवार है जो अर्थव्यवस्था संस्कृति पर्यावरण और समाज पर गहरा प्रभाव डालता है जहां यह विकास और समृद्धि लाता है वहीं इसके असंतुलित विकास से हानियां भी हो सकती हैं।

संदर्भ :–

- "भारत में पर्यटन" द्वारा, राजेश कुमार व्यास।
- "Tourism Economics and Policy" by Larry Dwyer.
- "Cultural Tourism in a changing World" by Smith, M. K and Robinson, M. (2005).
- "Heritage Tourism" by Dallen Timothy and Stephen William Boyd.